संस्कृत भाषा अमृत

संस्कृतिः संस्कृताश्रिता

संस्कृत भाषा हमें निष्ठा और समर्पण सिखाती है। संस्कृत हमें सुंदर बनाती है। उक्ताषय अध्यक्षीय आसंदी से कुलपति आचार्य कपिलदेव मिश्र ने हिंदी एवं भाषाविज्ञान विभाग में चल रहे दस दिवसीय संस्कृत संभाषण षिविर के समापन समारोह में व्यक्त किए। कार्यक्रम में दीप प्रज्ज्वलन पष्चात् वंदे मातरम् का गायन किया गया। हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. धीरेन्द्र पाठक जी ने श्रीफल एवं पुस्तक से सभी का स्वागत किया। ममता मिश्रा ने 'सारे जहां से अच्छा' राष्ट्रीय गीत को संस्कृत भाषा में प्रस्तुत किया। नीलम दुबे और प्रभात ष्षर्मा ने संस्कृत में मोबाइल पर वार्तालाप करके दिखाया। श्रीराम, ललिता, प्रियंका, स्वाती ने मिलकर संस्कृत में संख्यागीत को प्रस्तुत किया। सभी ने मिलकर वदत् संस्कृतम् जयतु संस्कृतम् का आह्वान किया। षिविर से लाभ प्राप्त कर षंकर लाल जड़िया एवं डॉ. डिंपल वर्मा ने संस्कृत संभाषण करते हुए अपने अनुभव को व्यक्त किया। षिविर में षिक्षक के रूप में षक्ति षुक्ला ने बड़े सरल रूप में संस्कृत पढ़ाने व सिखाने का कार्य किया। इस अवसर पर संस्कृत भारती के प्रांताध्यक्ष आचार्य राधिका प्रसाद मिश्र ने संस्कृत की उपयोगिता को समझाया। संस्कृत संगठन मंत्री डॉ जागेष्वर पटले ने कहा कि संस्कृत बालने से मुख की सारी तंत्रिकाएं कार्य करती हैं। इसलिए संस्कृत भाषा को प्राणायाम भाषा भी कहा गया। इस अवसर पर कुलपति ने षिविर के सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र

प्रदान किए। षिविर में डॉ. ए के गिल, नीलम दुबे, विपुला सिंह, प्रवेष पाण्डेय, तरूणा राठौर, अभय सिंह, रज्जन द्विवेदी राखी चतुर्वेदी, अजय मिश्रा आदि बड़ी संख्या में विद्वान एवं छात्र–छात्राएं उपस्थित हुए। कार्यक्रम का संचालन षिविर प्रतिभागी डॉ. दीप्ति जैन ने संस्कृत में किया और आभार संयोजिका डॉ. आषा रानी ने किया।